

મ-દની મુજા-કરા (કિતાબ નંબર ૬)

Gunge Bahron Ke Baare Mein  
Suwal Jawab (Gujarati)



# ગૂંગે બહરોં કે બારે મેં સુવાલ જવાબ



- ❁ ક્યા ગૂંગા બોલને પર કુદરત રખને વાલોં કી ઇમામત કર સકતા હે ?
- ❁ તો ક્યા ગૂંગા ગૂંગોં કા ભી ઈમામ નહીં હો સકતા ?
- ❁ ક્યા ગૂંગા ઝબ્હ કર સકતા હે ?
- ❁ ગૂંગે કા નિકાહ કિસ તરહ હોગા ?
- ❁ “અલ્લાહ” કા ઈશારા ગૂંગે બહરે કિસ તરહ કરેં ?

હમારે સુવાલાત ઔર

શૈબે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાલિયે દા'વતે ઇસ્લામી, હાજરત અલ્લામા મૌલાના અબૂ ઝિલાલ

મુહમ્મદ ઇલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી رحمۃ اللہ علیہ

કે જવાબાત

مکتبۃ المدینہ  
(دعوتِ اسلامی)

પેશકરા :  
મજલિસે મ-દની મુજા-કરા  
(દા'વતે ઈસ્લામી)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## કિતાબ પઢને કી દુઆ

અજ : શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઇસ્લામી, હજરતે અલ્લામા

મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઇલ્યાસ અતાર કાદિરી ર-ઝવી دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ

દીની કિતાબ યા ઇસ્લામી સબક પઢને સે પહલે જૈલ મેં દી હુઈ દુઆ પઢ

લીજિયે إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ જો કુછ પઢેંગે યાદ રહેગા. દુઆ યેહ હૈ :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ  
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

તરજમા : ઐ અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ ! હમ પર ઇલ્મ વ હિક્મત કે દરવાજે ખોલ દે ઔર હમ પર અપની  
રહમત નાઝિલ ફરમા ! ઐ અ-ઝમત ઔર બુઝુર્ગી વાલે. (المستطرف ج ١ ص ٤٠٠ دار الفكر بيروت)

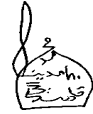
નોટ : અવ્વલ આખિર એક એક બાર દુરૂદ શરીફ પઢ લીજિયે.

તાલિબે ગમે મદીના

વ બકીઅ

વ મગિરત

13 શવ્વાલુલ મુકર્રમ 1428 હિ.



## (ગૂંગે બહરોં કે બારે મેં સુવાલ જવાબ)

યેહ રિસાલા (ગૂંગે બહરોં કે બારે મેં સુવાલ જવાબ)

મજલિસે મ-દની મુઝા-કરા (દા'વતે ઇસ્લામી) ને ઉર્દૂ ઝબાન મેં પેશ કિયા હૈ.

મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઇસ્લામી) ને ઇસ રિસાલે કો હિન્દી રસ્મુલ ખત મેં તરતીબ દે કર પેશ

કિયા હૈ ઔર મક-ત-બતુલ મદીના સે શાએઅ કરવાયા હૈ. ઇસ મેં અગર કિસી જગહ કમી બેશી પાએં તો

મજલિસે તરાજિમ કો (બ ઝરીઅએ મક્તૂબ, ઇ-મેઈલ યા SMS) મુત્તલઅ ફરમા કર સવાબ કમાઈયે.

રાબિતા : મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઇસ્લામી)

## મક-ત-બતુલ મદીના

સિલેક્ટેડ હાઉસ, અલિફ કી મસ્જિદ કે સામને, તીન દરવાઝા,

અહમદઆબાદ-1, ગુજરાત

## पहले घसे पढ लीजिये

तब्दीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के बानी, शैभे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत हजरते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इब्न अब्दुल्ला अतार कादिरि र-जवी जियाई رَضْوِيَّ ने अपने मजसूस अन्दाज में सुन्नतों भरे बयानात, इल्म व हिकमत से मा'भूर म-दनी मुआ-करात और अपने तरबियत याफ़ता मुबल्लिगीन के जरीअे कुछ ही अर्से में लाखों मुसल्मानों के दिलों में म-दनी इन्किलाब बरपा कर दिया है, आप رَضْوِيَّ की सोहबत से फ़ायेदा उठाते हुअे कसीर इस्लामी भाई वकतन इ वकतन मुफ्तलिफ़ मकामात पर होने वाले म-दनी मुआ-करात में मुफ्तलिफ़ किस्म के म-सलन अकाईद व आ'माल, इजाईल व मनाकिब, शरीअत व तरीकत, तारीख व सीरत, साईन्स व तिब, अफ्लाकिय्यात व इस्लामी मा'लूमात और दीगर बहुत से मौजूआत के मु-तअल्लिक सुवालात करते हैं और शैभे तरीकत अभीरे अहले सुन्नत رَضْوِيَّ उन्हें हिकमत आमोज व इशके रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ में डूबे हुअे जवाबात से नवाजते हैं. अभीरे अहले सुन्नत رَضْوِيَّ के इन अता कर्दा दिल यस्प और इल्मो हिकमत से लबरेज इशार्हात के म-दनी इल्लों की ખुशबूओं से दुन्या भर के मुसल्मानों को महकाने के मुकदस जजभे के तह्त दा'वते इस्लामी की मजलिसे म-दनी मुआ-करा इन म-दनी मुआ-करात को ज़री तरभीम के साथ तहरीरी गुलदस्तों की सूरत में पेश करने की सआदत हासिल कर रही है. इस म-दनी मुआ-करे के तहरीरी गुलदस्ते का मुता-लआ करने से إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ अकाईदो आ'माल और जाहिरों बातिन की इस्लाह, महब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ व इशके रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ला जवाल दौलत के साथ साथ मजीद हुसूले इल्मे दीन का जजबा भी बेदार होगा. إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ

﴿मजलिसे म-दनी मुआ-करा﴾

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## गूंगे बहरो के बारे में सुवाल जवाब

शैतान लाभ कोशिश करे मगर आप येह रिसाला मुकम्मल पढ कर एल्मे दीन हासिल कीजिये और सवाल के उकदार बनिये.

### दुइद शरीफ़ की इमीलत

सरकारे मदीना, राहते कल्बो सीना, साहिबो मुअत्तर पसीना. صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने बा करीना है : “अे लोगो ! बेशक बरोजे कियामत उस की दइशतों और हिसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शप्स वोह डोगा जिस ने तुम में से मुज पर दुन्या के अन्दर ब कसरत दुइद शरीफ़ पढे डोंगे.”

(الفردوس بمأثور الخطاب، ج ٥، ص ٢٧٧، حديث ٨١٧٥)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

### मा'लूमत से डोरा गूंगा बहरा

गूंगे बहरे इस्लामी त्माइयों और उमूमी इस्लामी त्माइयों पर मुशतमिल अेक म-दनी काइला राडे खुदा عَزَّوَجَلَّ में सइर करता हुवा किसी अलाके में पडोंया. वहां मुसल्मानों के घर में पैदा होने वाले अेक गूंगे बहरे नौ जवान पर इशारों की जवान में इन्किरादी कोशिश करते हुअे जब उसे नबिय्ये करीम, रउिहुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

इरमान मुस्तकी عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जिस क पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुअ पर दुरद पाक न पढा तहकीक  
 वोह बढे अप्त हो गया. (उर)

की शाने मुभा-रका के मु-तअद्लिक बताया गया तो वोह यौंक कर  
 एशारों में पूछने लगा : येह कौन हें ? या'नी वोह गूंगा बहरा नौ  
 जवान, नबिय्ये आबिरुजूमान, सुल्ताने दौ जहान  
 صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सो बिल्कुल ही अनजान था. बहर हाल  
 मुबद्लिगे द्वा'वते इस्लामी ने उस को एशारों की जहान में भीठे  
 भीठे आका صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जाते मुभा-रका के मु-तअद्लिक  
 बताया.

आह ! एन बेयारों को दीन कौन सिबाअे ! यकीनन येह बी  
 हमारे इस्लामी भाई हें, हमारी तवज्जोह के मुन्तजिर हें.

الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ एन की रहनुमाई के लिये द्वा'वते इस्लामी की  
 तरफ से “मजलिस बराअे भुसूसी इस्लामी भाई” काईम की गई है जो  
 के एन में म-दनी काम कर रही है इस्लामी भाईयों के लिये कुईले मदीना  
 कोर्स करवाने या'नी गूंगे बहरो की एशारों की जहान सिबाने का बा  
 काईदा सिब्लिसा है और एशारों की जहान जानने वाले मुबद्लिगीन  
 एन की तरबियत करते हें. एन की कोशिशों से ढेरों ढेर गूंगे बहरे और  
 नाबीना इस्लामी भाई हईतावार सुन्नतों तरे इजतिमाआत में शरीक  
 होने के साथ साथ सुन्नतों की तरबियत के म-दनी काईलों में सुन्नतों  
 तारा सफर बी इफ्तियार करते हें. गूंगे बहरो की रहनुमाई के लिये  
 भा'ज शर-ई अहकाम सुवालन जवाबन पेश किये जाते हें.

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जिस ने मुअ पर दस मरतबा सुबह और दस मरतबा शाम दुरदे पाक पढा (उसे कियामत के दिन मेरी शक़ाअत मिलेगी. (अ. 1/17))

## नमाज़ का बयान तकबीरे तहरीमा

**सुवाल:** गूंगे शप्स के लिये तकबीरे तहरीमा (या'नी नमाज़ की पहली तकबीर) का क्या हुकम होगा ?

**जवाब:** गूंगा या अैसा शप्स जिस की ज़बान किसी भी वजह से बन्द हो गई हो उस पर तकबीरे तहरीमा में तलफ़्फ़ुज़ (या'नी अल्फ़ाज़ अदा करना) ज़रूरी नहीं, दिल में ए़रादा कर लेना ही काफ़ी है. बहारे शरीअत में है : “जो शप्स तकबीर के तलफ़्फ़ुज़ पर कादिर न हो म-सलन गूंगा हो या किसी और वजह से ज़बान बन्द हो उस पर तलफ़्फ़ुज़ वाज़िब नहीं, दिल में ए़रादा काफ़ी है.”

(बहारे शरीअत, जि. 1, डिस्सा : 3, स. 508)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## किराअत

**सुवाल:** गूंगे के लिये किराअत (कुरआने पाक की तिलावत) के बारे में क्या हुकम है ?

**जवाब:** गूंगा यूंके कुरआने मज्जद पढने पर कादिर नहीं होता इस लिये इस पर किराअत करना लाज़िम नहीं है. (الدر المختار ورد المختار، ج ٢، ص ٢٢٠ ماخوفاً).

**सुवाल:** गूंगा बहरा कियाम में क्या करेगा ? क्या ब भिकदारे इर्ज़ व वाज़िब किराअत युप भडा रहेगा ?

**जवाब:** ज़ हां ! कियाम में ब भिकदारे इर्ज़ व वाज़िब किराअत युप भडा रहेगा.

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (عبدالرزاق)

## नापाकी की हालत और किराअत

**सुवाल:** अगर किसी गूंगे ने गुस्ल इर्ज होने की हालत में किराअत (कुरआने पाक की तिलावत) का इशारा किया तो क्या वोह गुनाहगार होगा ?

**जवाब:** ज़ो हां, इस सूरत में येह गुनाहगार होगा क्यूंके इस के हक में इशारा करना औसा ही है जैसे किसी बोलने वाले का कलाम (बात) करना. लिहाजा जिस तरह बोलने वाले के लिये नापाकी (या'नी गुस्ल इर्ज होने) की हालत में किराअत करना हराम है इसी तरह गूंगे के लिये भी किराअत का इशारा करना ना ज़ाईज व गुनाह है. उ-लमाअे किराम رَحْمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَامُ इरमाते हैं :  
“अगर किसी गूंगे ने नापाकी (या'नी गुस्ल इर्ज होने) की हालत में किराअत का इशारा किया तो उस का येह अमल हराम होगा.” (قرة عيون الاختيار تكملة ردالمحتار، ج ١٢، ص ١٤٦)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّدٍ

## धमामत

**सुवाल:** क्या गूंगे बोलने पर कुदरत रफने वालों की धमामत कर सकता है ?

**जवाब:** ज़ो नहीं. इतावा आलमगीरी में है : “कारी (या'नी दुरुस्त कुरआन पढने वाला जिस की नमाज दुरुस्त कुरआन पढने की वजह से इंसिद न होती हो) को गूंगे और उम्मी (या'नी गलत कुरआन पढने वाला जिस की नमाज गलत कुरआन पढने की वजह से इंसिद होती हो) की इक्तिदा करना सहीह नहीं है.”

करमाने मुस्तक़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ज़ो मुअ पर रोउ ज़ुमुआ दुउद शरीफ़ पढेगा में कियामत के दिन उस की शकारत करेगा. (क़ुरआन)

**सुवाल:** तो क्या गूंगा गूंगों का भी ईमाम नहीं हो सकता ?

**जवाब:** गूंगा गूंगों का ईमाम हो सकता है. हु-क़डाअे किराम رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام इरमाते हैं : “अगर गूंगा गूंगों की ईमामत करे तो सारे गूंगों की नमाज़ हो जायेगी.” (الفताوى الهندية، ج 1، ص 83)

**सुवाल:** गूंगा, उम्मी का ईमाम बन सकता है या नहीं ?

**जवाब:** ज़ैसा उम्मी ज़ो के दुरुस्त तौर पर तकबीरे तहरीमा भी न कड सकता हो, गूंगा उस की ईमामत कर सकता है. सदरुशशरीअड, बहरुतरीकड हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي इरमाते हैं : “अगर उम्मी सहीह तौर पर तहरीमा भी बांध नहीं सकता तो गूंगे की ईक़्तिदा कर सकता है.” (الدر المختار ورد المختار، ج 2، ص 391) व बहारे शरीअत, जि. 1, ख़िस्सा : 3, स. 570)

**सुवाल:** क्या गूंगा उम्मी की ईक़्तिदा कर सकता है ?

**जवाब:** ज़ो हां, गूंगा उम्मी की ईक़्तिदा में नमाज़ अदा कर सकता है. सदरुशशरीअड, बहरुतरीकड हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي इरमाते हैं : “उम्मी गूंगे की ईक़्तिदा नहीं कर सकता गूंगा उम्मी की कर सकता है.”

(الدر المختار ورد المختار، ج 2، ص 391) व बहारे शरीअत, जि. 1, ख़िस्सा : 3, स. 570)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



करमाने मुस्तफ़। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुअ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (ابوعلی)

## नमाज की सुन्नतें

**सुवाल:** अगर मुक्तदी बहरा हो और एमाम बिल जहूर (या'नी बुलन्द आवाज से) किराअत शुअ कर दे जब के अभी मुक्तदी ने सना नहीं पढी तो क्या उस के लिये भी जामोश रहने और सना न पढने का हुकम होगा ?

**जवाब:** जो हां, बहरे के लिये भी येही हुकम है या'नी बहरा भी सना न पढे. सदरुशरीअह, बहरुतरीकह उजरते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَقْوَى इरमाते हैं : “एमाम ने बिल जहूर किराअत शुअ कर दी तो मुक्तदी सना न पढे अगर्ये ब वजह दूर होने या बहरे होने के एमाम की आवाज न सुनता हो जैसे जमुआ व एदैन में पिछली सफ़ के मुक्तदी, के ब वजह दूर होने के किराअत नहीं सुनते. (३०६, وغنية المتملی، ص १०، ج १، الفتاوى الهندية، ج १، ص ५२३) एमाम आहिस्ता पढता हो तो पढ ले.”

(رد المحتار، ج २، ص ५२२) व बहारे शरीअत, जि. 1, डिस्सा : 3, स. 523)

## नमाजी गूंगा

बाबुल मदीना कराची के अलाके लियाकत आबाद की अक मस्जिद के एमाम साहिब के बयान का फुलासा है : कुछ दिनों से जब भी मैं मस्जिद में दाबिल होता तो अक नौ जवान को पडली सफ़ में मौजूद पाता, जो अजान से पडले ही आ कर बैठ जाता और जिको अजकार में मशगूल रहता. मैं उन से बेहद मु-तअस्सिर हुवा के आज के पुर इतन दौर के अन्दर भरपूर

﴿فَرْمَانِ مُسْتَفِيٍّ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : تُوْمَ جَلَدَا بِنِي لَدَا مُؤْجَ پَر دُرْدَ پَدَا كَ تُوْمَدَارَا دُرْدَ مُؤْجَ تَكَّ پَلَوَّيْتَا لَ . (طُرَابُ)﴾

जवानी में ईबादत का औसा जजबा.....!! नौ जवान का येह बी मा'मूल था के बहुत देर तक हुआओं मांगता रहता. मैं ने ओक दिन उन से मुलाकात की तो मा'लूम हुवा के वोह कुव्वते गोयाई और समाअत से महरूम (या'नी गूंगे बहरे) हैं. मजीद मा'लूमात की तो पता यला के येह नेक नमाजी गूंगे बहरे ईस्लामी भाई दा'वते ईस्लामी के म-दनी माडोल से वाबस्ता हैं और हईतावार सुन्नतों भरे ईजतिमाअ में शिर्कत करने के साथ साथ आशिकाने रसूल के हभराह म-दनी काइलों में बी सुन्नतों भरा सफ़र इरमाते हैं. अब तक येह 30 दिन के म-दनी काइलों में दो मर्तबा सफ़र की सआदत हासिल कर चुके हैं. उस अलाके के ईस्लामी भाईयों का कलना है के **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** उस गूंगे बहरे ईस्लामी भाई को म-दनी काइलों में सफ़र की ब-र-कत से औसा षौंके षुदा **اَلْحَمْدُ** हासिल हुवा के येह अकसर तन्हाई में बैठ कर हुआओं मांगते और षौंके षुदा **اَلْحَمْدُ** से रोते दिभाई देते हैं.

जब के गूंगे बहरे ईस्लामी भाई के वालिद साहिब का बयान कुछ यूं है के मेरा बेटा अब पाबन्दी के साथ नमाज अदा करता है, इस के ईलावा दीगर म-दनी ईन्आमात के साथ साथ गूंगे बहरे ईस्लामी भाईयों के इस म-दनी ईन्आम : “क्या आज आप ने कुरआने पाक (कन्जुल ईमान) में कम अज कम ओक रुकूअ की जियारत इरमाई ?” पर बी अमल करता है युनान्हे मेरा बेटा रोजाना कुरआने मज्हद की

करमाने मुस्तफ़ी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुअ पर दस भरतभा दुर्रद पाक पढा अल्लाह उंस पर सो रलमतें नाजिल करमाता है. (प्रा.)

जियारत करता है और उसे यूमता भी है. दा'वते ईस्लामी का मेरे ठीपर बहुत बडा ओडसान है जिस ने मेरे बेटे की जिन्दगी को बदल कर रभ दिया.

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

### सजदओ तिलावत

**सुवाल:** अगर किसी बहरे ने आयते सजदा तिलावत की तो क्या उस पर सजदा वाजिब होगा ?

**जवाब:** अगर ईतनी आवाज थी के अगर वोह बहरा न होता तो सुन लेता तो सजदा वाजिब हो गया वरना नहीं. इतावा आलमगीरी में है : अगर किसी बहरे ने आयते सजदा तिलावत की और बहरा होने की वजह से न सुनी (या'नी ईतनी आवाज थी के बहरा न होता तो सुन लेता) तो उस पर सजदओ तिलावत वाजिब हो जाओगा. (الفتاوى الهندية، ج 1، ص 133)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

### जुमुआ का बयान

**सुवाल:** अगर भतीब ने आकिल बालिग मर्द बहरो के सामने जुम्बओ जुमुआ पढा तो क्या जुम्बा हो जाओगा ?

**जवाब:** जहाँ, सदरुशरीअह, बहरुत्तरीकह हजरते अल्लामा मौलाना मुइती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي इरमाते हैं : “जुम्बओ जुमुआ के लिये येह शर्त है के ईतनी आवाज से हो के पास वाले सुन सकें अगर कोई अन्न मानेअ (या'नी रुकावट) न हो तो अगर जवाल से पेशतर

﴿إِذْ قَالَ اللَّهُ لِمُوسَىٰ إِنَّكَ عَلَىٰ أَعْيُنِنَا وَإِسْمُكَ عَلَيْنَا فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ إِنَّكَ بِالْوَهَّابِينَ ﴿١٧٠﴾﴾  
 ﴿لَوْ أَنَّ فِيهَا رَسُولٌ لِّمَنْ أُسْمِيَ بِهِ لَكُنَّا حَافِيًا عَلَيْهِ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ فَعَزَّزْنَا بِدُحْرِ الْوَهَّابِ ﴿١٧١﴾﴾  
 ﴿لَوْ أَنَّ فِيهَا رَسُولٌ لِّمَنْ أُسْمِيَ بِهِ لَكُنَّا حَافِيًا عَلَيْهِ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ فَعَزَّزْنَا بِدُحْرِ الْوَهَّابِ ﴿١٧٢﴾﴾  
 ﴿لَوْ أَنَّ فِيهَا رَسُولٌ لِّمَنْ أُسْمِيَ بِهِ لَكُنَّا حَافِيًا عَلَيْهِ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ فَعَزَّزْنَا بِدُحْرِ الْوَهَّابِ ﴿١٧٣﴾﴾  
 ﴿لَوْ أَنَّ فِيهَا رَسُولٌ لِّمَنْ أُسْمِيَ بِهِ لَكُنَّا حَافِيًا عَلَيْهِ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ فَعَزَّزْنَا بِدُحْرِ الْوَهَّابِ ﴿١٧٤﴾﴾  
 ﴿لَوْ أَنَّ فِيهَا رَسُولٌ لِّمَنْ أُسْمِيَ بِهِ لَكُنَّا حَافِيًا عَلَيْهِ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ فَعَزَّزْنَا بِدُحْرِ الْوَهَّابِ ﴿١٧٥﴾﴾  
 ﴿لَوْ أَنَّ فِيهَا رَسُولٌ لِّمَنْ أُسْمِيَ بِهِ لَكُنَّا حَافِيًا عَلَيْهِ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ فَعَزَّزْنَا بِدُحْرِ الْوَهَّابِ ﴿١٧٦﴾﴾  
 ﴿لَوْ أَنَّ فِيهَا رَسُولٌ لِّمَنْ أُسْمِيَ بِهِ لَكُنَّا حَافِيًا عَلَيْهِ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ فَعَزَّزْنَا بِدُحْرِ الْوَهَّابِ ﴿١٧٧﴾﴾  
 ﴿لَوْ أَنَّ فِيهَا رَسُولٌ لِّمَنْ أُسْمِيَ بِهِ لَكُنَّا حَافِيًا عَلَيْهِ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ فَعَزَّزْنَا بِدُحْرِ الْوَهَّابِ ﴿١٧٨﴾﴾  
 ﴿لَوْ أَنَّ فِيهَا رَسُولٌ لِّمَنْ أُسْمِيَ بِهِ لَكُنَّا حَافِيًا عَلَيْهِ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ فَعَزَّزْنَا بِدُحْرِ الْوَهَّابِ ﴿١٧٩﴾﴾  
 ﴿لَوْ أَنَّ فِيهَا رَسُولٌ لِّمَنْ أُسْمِيَ بِهِ لَكُنَّا حَافِيًا عَلَيْهِ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ فَعَزَّزْنَا بِدُحْرِ الْوَهَّابِ ﴿١٨٠﴾﴾

पुतबा पढ लिया या नमाज के आ'द पढा या तन्हा पढा या औरतों बय्यों के सामने पढा तो इन सब सूरतों में जुमुआ न हुवा और अगर बहरों या सोने वालों के सामने पढा या हाजिरीन दूर हें के सुनते नहीं या मुसाफिर या बीमारों के सामने पढा जो आकिल बाविग मर्द हें तो हो जायेगा.”

(الدر المختار و رد المحتار، ج ٣، ص ٢١، 1، डिस्सा : 4, स. 766)

**सुवाल:** जुमुआ के लिये शर्त है के इमाम के इलावा कम अज कम तीन अफराद हों, अगर वोह तीनों गूंगे हों तो क्या जुमुआ दुरुस्त हो जायेगा ?

**जवाब:** अगर जुमुआ में इमाम के इलावा तीन मुक्तदी गूंगे हों जब भी जुमुआ दुरुस्त हो जायेगा. सदरुशशरीअह, बदरुत्तरीकह उजरते अल्लामा मौलाना मुफ्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي : “अगर तीन गुलाम या मुसाफिर या बीमार या गूंगे या अनपढ मुक्तदी हों तो जुमुआ हो जायेगा, सिर्फ औरतें या बय्ये हों तो नहीं.”

(الفتاوى الهندية، ج ١، ص ٤٨، ١، ورد المختار، ج ٣، ص ٢٧)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

**हज का जयान**

**सुवाल:** निव्यत करने के आ'द अउराम के लिये अेक बार जयान से “लब्बैक” कहना जरूरी है, गूंगे के लिये क्या हुकम होगा ?

करमाने मुस्तफ़ी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वो मुज पर दुइदे पाक न पड़े. (म)

**जवाब:** सदरुशशरीअह, बहरुतरीकह उजरते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي فرमाते हैं :  
 “ओहराम के लिये ओक मर्तबा ज़बान से लब्बैक कलना जरूरी है और अगर ईस की जगह اللهُ إِلَّا اللهُ يا और कोई जिक्रे धलाही किया और ओहराम की नियत की तो ओहराम हो गया मगर सुन्नत लब्बैक कलना है. गूंगा हो तो उसे यादिये के डोंट को जुम्बिश दे.” (فتاوى الهندية، ج 1، ص 222،  
 व बहारे शरीअत, जि. 1, डिस्सा : 6, स. 1074)

### क्या गूंगा ऋह कर सकता है ?

**सुवाल:** क्या मुसल्मान गूंगे का ऋह किया हुवा जानवर उलाल है ?

**जवाब:** ज़ हां. सदरुशशरीअह, बहरुतरीकह उजरते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي فرमाते हैं : “गूंगे का ज़बीहा उलाल है.” (فتاوى الهندية، ج 1، ص 286،  
 व बहारे शरीअत, जि. 3, डिस्सा : 15, स. 316)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

### सलाम का बयान

**सुवाल:** अगर बहरे ने किसी को सलाम किया तो उस के जवाब की क्या सूरत होगी ?

**जवाब:** बहरे के सलाम के जवाब में सिर्फ़ डोंटों को जुम्बिश देना (या'नी डोंट खिवा देना) ही काफ़ी है. कु-कहाओ किराम फ़रमाते हैं : “सलाम धतनी आवाज़ से कहे के जिस को सलाम

﴿فَرْمَانٌ مُّسْتَدْرِكٌ﴾ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुअ करे पर रोले जुमुआ दौ सो बार दुरहे पाक पढा उस के दौ सो साल के गुनाह मुआक छोणे. (अल-अल)

किया है वोह सुन ले और अगर एतनी आवाज न हो तो जवाब देना वाजिब नहीं. जवाबे सलाम भी एतनी आवाज से हो के सलाम करने वाला सुन ले और एतना आखिस्ता कड़ा के वोह सुन न सका तो वाजिब साकित न हुवा, और अगर वोह (सलाम करने वाला) बहरा है तो उस के सामने छोट को जुम्बिश दे के उस की समज में आ जाये के जवाब दे दिया, छीक के जवाब का भी येही हुकम है.” (البزازیة علی هامش الفتاوی الهندیة، ج ٦، ص ٣٥٥)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ

### आशिके रसूल गूंगा

बाबुल मदीना करायी के मुकीम इस्लामी भाई ने कुछ इस तरह बताया के आलमी म-दनी मर्कज इजाने मदीना में तरबियती निशस्त में शरीक गूंगे बहरे इस्लामी भाईयों में अेक मुबद्लिग ईशारों की जभान में जयान इरमा रहे थे. जब उन्हीं ने दुरहे पाक की इजीलत बताई के “अद्लाह एउजल की खातिर आपस में मडब्बत रबने वाले जब बाहम मिलें और मुसा-इहा करें (या'नी हाथ मिलाओं) और नबी (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) पर दुरहे पाक भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दौनों के अगले पिछले गुनाह बग्श दिये जाते हैं.” (مسند ابی یعلیٰ، ج ٣، ص ٩٥، حدیث ٢٩٥١)

जयान मुबद्लिग इस्लामी भाई को ईशारे में दर-प्वास्त की के मुजे दुरहे पाक और सलाम करना सिखाओं. मुबद्लिग इस्लामी भाई ने उन की पौर प्वाही करते हुअे उन्हें मजकूरा चीजें सिखाना शुइअ कीं. वोह

﴿ یرمانہ مستکفٰ علی اللہ تعالیٰ غنیو اللہ و سلم ۛ : मुअ पर दुइडे शरीक पढे अल्लाह तुम पर रहमत लेजेगा. ﴾

(अन हदी)

गूंगे बहरे ईस्लामी भाई पाबन्दी से निशस्त में शिकत इरमाते रहे. आबिर कार उन्हीं ने कुछ ही अर्से में ईशारों की जमान में सलाम करना और दुइडे पाक पढना सीख लिया. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ उन्हीं ने अपना मा'मूल बना लिया के जब भी किसी से मुलाकात होती है तो पहले सलाम करते हैं और फिर मुसा-इहा कर के (या'नी हाथ मिला कर) दुइडे पाक जरूर पढते हैं.

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ

### निकाह का जमान

**सुवाल:** गूंगे का निकाह किस तरह होगा ?

**जवाब:** गूंगे का निकाह ईशारे के जरीअे होगा जब के ईस का ईशारा समज में आता हो. इतावा आलमगीरी में है : निकाह जिस तरह बोल कर होता है ईसी तरह गूंगे के ईशारे से भी हो जाओगा जब के ईस के ईशारे समज में आते हों.

(الفتاوى الهندية، ج ١، ص ٢٧٠)

**सुवाल:** क्या गूंगे अैसों के निकाह के गवाह हो सकते हैं जे बोलने पर कादिर हों ?

**जवाब:** इतावा आलमगीरी में है : “गूंगे (निकाह के) गवाह नहीं हो सकते के जे गूंगा होता है बहरा भी होता है हां अगर गूंगा हो बहरा न हो तो हो सकता है.”

(الفتاوى الهندية، ج ١، ص ٢٦٨)

करमान मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुअ पर कसरत से दुरुद पाक पढो बशक तुम्हारा मुअ पर दुरुद पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मज्फिरत है. (म् १५)

**सुवाल:** दो गवाहों में से अगर एक गवाह बहारा हो और कोई उस के कान पर शीष कर कहे और वोह सुन ले तो क्या अब निकाह दुरुस्त हो जायेगा ?

**जवाब:** अगर ये एक ही गवाह बहारा हो और कोई उस के कान पर शीषे तो वोह सुन ले तब भी निकाह उस वक्त तक दुरुस्त नहीं होगा जब तक के दोनों गवाह एक साथ ईजाब व कबूल न सुन लें. इतावा जानिया में है : “एक गवाह सुनता हुआ है और एक बहारा, बहारे ने नहीं सुना और ईस सुनने वाले या किसी और ने थिल्ला कर उस के कान में कहा निकाह न हुआ जब तक दोनों गवाह एक साथ आकिदैन (या’नी निकाह के दोनों फ्रीकैन म-सलन दूल्हा व वकील या दूल्हा और दुल्हन) से न सुनें.”

(الفتاوى الحانية، ج 1، ص 106)

**सुवाल:** निकाह में ईजाब व कबूल से क्या मुराद है ?

**जवाब:** ईजाब व कबूल म-सलन एक कहे में ने अपने को तेरी जौजियत में दिया, दूसरा कहे में ने कबूल किया. येह निकाह के रुकन हैं. पहले जो कहे वोह ईजाब है और उस के जवाब में दूसरे के अल्फाज को कबूल कहे हैं. येह कुछ जरूर नहीं के औरत की तरफ से ईजाब हो और मर्द की तरफ से कबूल बल्के ईस का उलटा भी हो सकता है.

(الدر المختار ورد المحتار، ج 4، ص 78)

**सुवाल:** अगर आकिदैन (ईजाब व कबूल करने वाले दोनों) गूंगे हों तो क्या गूंगे उस निकाह के गवाह बन सकते हैं ?

**जवाब:** जो हां, अगर मर्द व औरत दोनों गूंगे हों तो गूंगे और बहारे भी उस निकाह के गवाह हो सकते हैं. जैसा के इतावा



करमान मुस्तक! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जो मुअ पर अक दुइद शरीक पढता है अल्लाह उस क लिये अक कीरात अज लिखता है और कीरात उलुद पहाड जितना है. (मुराद)

शामी में है : आकिटैन (ईजाब व कबूल करने वाले दोनों) गूगे हों तो निकाह ईशारे से डोगा. लिहाजा ईस निकाह का गवाह गूगा भी हो सकता है और बहुरा भी.

(رد المحتار، ج ٤، ص ٩٩)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

### तलाक का बयान

**सुवाल:** अगर किसी गूगे ने अपनी बीवी को ईशारे के जरीअे तलाक दी तो क्या तलाक हो जायेगी ?

**जवाब:** जो हां, तलाक हो जायेगी, लेकिन येह हुकम ईस सूरत में है जब के वोह लिखना न जानता हो वरना लिख कर देगा तो ही डोगी. इत्हुल कदीर में है : “गूगे ने ईशारे से तलाक दी हो गई जब के लिखना न जानता हो, और लिखना जानता हो तो ईशारे से न डोगी बल्के लिखने से डोगी.”

(فتح القدير، ج ٣، ص ٤٨٣)

**सुवाल:** क्या ईशारे से हर गूगे की तलाक हो जाती है या सिर्फ उसी की डोती है जो के पैदाईशी गूगा हो ?

**जवाब:** ईस से मुराद पैदाईशी गूगा है अगर कोई बा'द में गूगा हुवा और यूं ही रहा यहां तक के उस के ईशारे समज में आना शुइअ हो गअे जब तो तलाक हो जायेगी और अगर समज में न आते हों या उन में शक डोता हो तो नही डोगी. युनान्ये कु-कडाअे किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَامُ करमाते हैं : गूगे की तलाक ईशारे के जरीअे हो जाती है ईस गूगे से मुराद वोह है जो के पैदाईशी गूगा हो या बा'द में हुवा हो और उस के ईशारे समज में आने लग गअे



करमाने मुस्तफ़ा عَلِيُّ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुअ पर अक बार दुइदे पाक पढा अटलाह उस पर दस रकमते बेजता है. (1)

**सुवाल:** जिहार<sup>1</sup> किसे कहते हैं ?

**जवाब:** अपनी बीवी को या उस के किसी जुज्वे शाअेअ को (म-सलन उस के आधे हिस्से को) या जैसे जुज (हिस्से) को जो के कुल से ता'बीर किया जाता हो (या'नी वोह हिस्सअे बदन बोल कर पूरा जिस्म मुराद लिया जाता हो जैसे सर, गरदन वगैरा) औसी औरत से तशबीह देना जो उस पर हमेशा के लिये हराम हो (जैसे मां, बहन, बेटी, भाला, झूड़ी, भान्ज, भतीज) या उस के किसी औसे उज्व (हिस्से) से तशबीह देना जिस की तरफ़ देभना (उस के लिये) हराम हो (जैसे शर्मगाह, रान, पेट, पीठ वगैरा) म-सलन (बीवी से) कहा के तू मुअ पर मेरी मां की मिस्ल (तरह) है या तेरा सर या तेरी गरदन या तेरा निस्फ़ मेरी मां की पीठ की मिस्ल है. (बहारे शरीअत, जि. 2, हिस्सा : 8, स. 205)

**सुवाल:** जिहार का हुक्म क्या है ?

**जवाब:** इस का हुक्म येह है के जब तक मर्द जिहार का कफ़ारा अदा न कर ले उस वक्त तक अपनी बीवी से जिमाअ करना, शह्वत के साथ उस का बोसा लेना, या (शह्वत से) उस को धूना, या (शह्वत के साथ) उस की शर्मगाह की तरफ़ नजर करना हराम है. और बिगैर शह्वत धूने या बोसा लेने में हरज नहीं, मगर लब का बोसा बिगैर शह्वत भी ज़ाईज नहीं.

(الجوهرة النيرة، الجزء الثاني، ص 82، والدر المختار، ج 5، ص 130)

**सुवाल:** जिहार का कफ़ारा क्या है ?

**जवाब:** गूंगा और गैर गूंगा दोनों ही के लिये जिहार के कफ़ारे की तीन सूरते

1 : जिहार के तफ़सीली अहकाम के लिये मक-त-अतुल मदीना की मन्बूआ बहारे शरीअत जिहद 2, हिस्सा 8 में "जिहार का बयान" और "कफ़ारे का बयान" पढ लीजिये.

﴿رَمَانٌ مُّسْتَفْهِمٌ﴾ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَرَسُولِهِ : श्री शप्स मुअ पर दुइडे पाक पढना भूल गया वोड जन्त का रास्ता भूल गया. (ط. 1)

हैं ﴿1﴾ गुलाम या कनीज आजाद करे अगर इस पर कुदरत न हो तो ﴿2﴾ (सिने छिजरी के) दो माह के लगातार रोजे रभे अगर इस पर कुदरत न हो तो ﴿3﴾ साठ भिस्कीनों को दो वक्त (या'नी सुबह, शाम का) पाना पिलाये या 60 भसाकीन को स-द-कमे फिर अदा करे. (बहारे शरीअत, जि. 2, खिस्सा : 8, स. 104, 109 मुलम्भसन)

**सुवाल:** अगर भीवी से जिमाअ करना न याहे या भीवी ही झैत हो जाये तो क्या फिर भी कर्फ़ारा अदा करना होगा ?

**जवाब:** नहीं. इतावा आलमगीरी में है : जिहार करने वाला जिमाअ का इरादा करे तो कर्फ़ारा वाजिब है और अगर येह याहे के वती न करे और औरत उस पर हराम ही रहे तो कर्फ़ारा वाजिब नहीं और अगर इरादमे जिमाअ था मगर जौजा मर गई तो वाजिब न रहा. (फ़तावु अल-हिन्दी, ज 1, स 90)

## लियान का जयान

**सुवाल:** लियान किसे कहते हैं ?

**जवाब:** मर्द ने अपनी औरत को जिना की तोहमत लगाई इस तरह के अगर अज्जबिय्या औरत को लगाता तो उद्वे कजई (या'नी तोहमते जिना की उद्वे) इस पर लगाई जाती. या'नी औरत आकिला (या'नी अक्ल वाली), बालिगा, हुर्दा (या'नी आजाद), मुस्लिमा, अझीफ़ा (या'नी पाक दामन) हो तो लियान किया जायेगा. इस का तरीका येह है के काजी के हुजूर पहले शोहर कसम के साथ यार मर्तबा शहादत (गवाही) दे या'नी कहे के मैं शहादत (गवाही) देता हूँ के मैं ने जो इस औरत को जिना की तोहमत लगाई इस में जुदा की कसम में सय्या हूँ फिर पांचवीं मर्तबा येह कहे के उस पर जुदा की ला'नत अगर इस अत्र में

किरमान मुस्तफा حَسْبِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जिस के पास मेरा जिंक हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रद पाक न पढा तबकीक वोह बढ भप्त हो गया. (उज्ज)

के उस को जिना की तोहमत लगाई जूट बोलने वालों से हो. और हर बार लफ्ज “ईस” से औरत की तरफ ईशारा करे फिर औरत यार मर्तबा येह कहे के मैं शहादत (गवाही) देती हूं पुदा की कसम ! ईस ने जो मुझे जिना की तोहमत लगाई है ईस बात में जूटा है और पांचवीं मर्तबा येह कहे के उस पर अद्लाह جَزَاءُ का गजब हो अगर येह उस बात में सय्या हो जो मुझे जिना की तोहमत लगाई. **विआन** में लफ्ज शहादत (गवाही) शर्त है अगर येह कहा के पुदा की कसम खाता हूं के सय्या हूं **विआन** न हुआ. (बहारे शरीअत, जि. 2, खिस्सा : 8, स. 220)

**सुवाल:** अगर मियां, बीवी दोनों या उन में से कोई अेक गूंगा हो तो क्या उन के दरमियान **विआन** हो जायेगा ?

**जवाब:** **नहीं.** दुर्रे मुफ्तार में है : “अगर मियां बीवी दोनों गूंगे हों या कोई अेक गूंगा हो तो उन के दरमियान **विआन** नहीं हो सकता.” (الدرالمختار، ج 5، ص 162)

**सुवाल:** अगर **विआन** के बा’द अम्मी काजी ने तफरीक (जुदाई) नहीं की थी के उन में से कोई गूंगा हो गया तो क्या येह **विआन** दुरुस्त हो जायेगा, और उन के दरमियान जुदाई होगी ?

**जवाब:** नहीं. उन के दरमियान तफरीक (जुदाई) नहीं होगी. कु-कहाये किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَامُ ईरमाते हैं : “अगर कोई तफरीक से पहले और **विआन** के बा’द गूंगा हो गया तो उन के दरमियान तफरीक (जुदाई) न होगी.” (الدرالمختار، ج 5، ص 162)

**सुवाल:** तो क्या ईस सूरत में उन पर हद (जिना की औरत पर, तोहमत की शोहर पर) होगी ?

**जवाब:** **नहीं.** ईस सूरत में किसी पर हद नहीं होगी, क्यूंके शुभा आ

करमाने मुस्तफ़ा: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غَلِيظُ الْعِقَابِ : जिस ने मुअ करे अक बार दुइटे पाक पढा अल्लाह उस पर दस रकमतें बेजता है. (1)

गया और शुबा की वजह से लुहूद साकित (दूर) हो जाती हैं।  
युनान्हे दुर्रे मुफ्तार में है : “और न किसी को लद लगेगी क्यूंके शुबा की वजह से लद दूर हो जाती है.” (الدر المختار، ج ٥، ص ١٦٢)

### कसम का बयान

**सुवाल:** अगर किसी ने कसम भाई के किसी से ली कलाम नहीं करुंगा, फिर उस ने किसी गूंगे या बहरे से कलाम कर लिया तो क्या उस की कसम टूट जायेगी ?

**जवाब:** ७ हां. हु-कलाओ किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَامُ इरमाते हैं : अगर किसी ने कसम भाई के किसी से कुछ नहीं बोलेगा और गूंगे या बहरे से कलाम कर लिया तो कसम टूट जायेगी.

(الفتاوى الهندية، ج ٢، ص ١٠٠)

### अकीदे का बयान

“अल्लाह” का धशारा गूंगे बहरे किस तरह करें ?

**सुवाल:** ‘आज कल गूंगे बहरो को तरबियत देने वाले “अल्लाह” का धशारा आस्मान की तरफ उगली उठवा कर सिपाते हैं ये ल कहां तक दुरुस्त है ?

**जवाब:** ये ल तरीका कत्बन गलत है. इन बेयारों के जेहन में ये ली नजरियात बैठ जाते होंगे के “अल्लाह” तआला ओपर है या ओपर उस का मकान है जिस में वो ल रहता है ये ल दोनों भातें कुई हैं अल्लाह جَزَّوَجَلَّ जिहत (या’नी सन्त) से ली पाक है और मकान से ली. आस्मान की तरफ धशारा करने के बजाओ इन को लाथ के जरीओ लफ़्ज़ “अल्लाह (الله)” बनाना सिपाना या लिये और धस का तरीका निहायत ली आसान है. सीधे लाथ की उंगलियां मा’भूली सी कुशादा कर के अंगूठे का सिरा ओपर की तरफ थोडा सा बढा कर

﴿ كَرَّمَانِ مُسْتَكْفٍ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ السَّلَامُ : جَوَّ شَظْسِ مُؤَلِّدٍ دُرِّدِ پَاكِ پَدَنَا بُولُ گَا یَا وَوَلِ جَنَنَاتِ كَا رَاَسْتَا بُولُ گَا. (طُرُقٌ) ﴾

शहादत की उंगली के पहलू के वस्त में लगा लीजिये अब सीधी  
हथेली की पुश्त की तरफ़ देखिये तो लफ़्ज अल्वाह (آه) महसूस  
होगा. इसी तरह कर के उलटे हाथ की हथेली की अगली तरफ़  
देभेंगे तो अल्वाह (آه) लिखा हुआ नज़र आयेगा.

### झिंभें कुझिय्यात सीजने का जरीया हैं

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो! अल्वाह तआला के लिये मकान और  
जिहलत (या'नी सन्त) साबित करने वाले जुम्हे लोगों में काफ़ी  
राईज होते जा रहे हैं म-सलन "उपर वाला" कलना तो बहुत  
जियादा आम है. जो के अकसर लोगों ने जियादा तर झिंभों  
डिरामों से सीखा है. यूँके हर मुसल्मान कुझिय्यात की पहचान  
नहीं कर पाता, इस वजह से न जाने कितने मुसल्मान रोजाना  
येह ग-लतियां करते होंगे. जिन लोगों से जिन्दगी में कभी अक  
बार भी येह जुम्हा सादिर हो गया हो उन्हें याहिये के इस से तौबा  
करें और नअे सिरै से कलिमा पढ़ें और अगर शादी शुदा हें तो नअे  
सिरै से निकाल भी करें. काश ! मुसल्मान बुरे ज्ञातिमे का उर  
अपने अन्दर पैदा करें, झिंभों डिरामों और गाने बाजों से  
कनारा कशी इप्तिहार करें और ज़रिय्याते दीन का इल्म हासिल  
करें. आह ! भौत हर वक्त सर पर ञडी है ! भौत बीमारियों,  
धमाकों, हंगामों, सैलाबों, तूफ़ानी बारिशों, जलजलों, आतश  
जदगियों, नीज तेज रफ़्तार गाड़ियों के हादिसों के जरीअे अख़े  
भासे कडियल जवानों को भी झैरी तौर पर उयक कर ले जाती है  
और सारी भर मस्तियां और इन्कारियां पाक में मिल जाती हें

जल गअे परवाने शम्भें पानी पानी हो गई

मेरा तेरा जिंक हो कर अ-नुमन में रह गया

﴿كِرْمَانِ مُسْتَكْفٍ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ﴾ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइदे पाक न पढा तडकीक  
 ज़वोड बढ भप्त छो गया. (अ:१)

﴿१२﴾ इंडरिस ﴿१८६﴾

| उ-वानात                     | अंक | उ-वानात                      | अंक |
|-----------------------------|-----|------------------------------|-----|
| पडले ँसे पढ लीजिये          | 1   | जुमुआ का बयान                | 9   |
| दुइदे शरीफ की इज्जत         | 2   | डज का बयान                   | 10  |
| मा'लूमात से कोरा गूंगा बहरा | 2   | क्या गूंगा जब्द कर सकता है ? | 11  |
| नमाज का बयान                | 4   | सलाम का बयान                 | 11  |
| तकबीरे तडरीमा               | 4   | आशिके रसूल गूंगा             | 12  |
| किराअत                      | 4   | निकाड का बयान                | 13  |
| नापाकी की डालत और किराअत    | 5   | तलाक का बयान                 | 15  |
| ईमामत                       | 5   | जिडार का बयान                | 16  |
| नमाज की सुन्नतें            | 7   | द्विआन का बयान               | 18  |
| नमाजी गूंगा                 | 7   | कसम का बयान                  | 20  |
| सजदअे तिलावत                | 9   | अकीदे का बयान                | 20  |

माخذ ومراجع

| مطبوعه                          | کتاب            | مطبوعه                 | کتاب                  |
|---------------------------------|-----------------|------------------------|-----------------------|
| سہیل اکیڈمی لاہور               | غنیۃ المتعلی    | دارالکتب العلمیۃ بیروت | الفردوس بمآثور الخطاب |
| دارالفکر بیروت                  | فتاویٰ عالمگیری | دارالکتب العلمیۃ بیروت | مسندابی یعلیٰ         |
| دارالمعرفۃ بیروت                | درمختار         | پشاور                  | فتاویٰ خانیہ          |
| دارالمعرفۃ بیروت                | رد المحتار      | کوئٹہ                  | فتح التقدیر           |
| مکتبۃ المدینۃ باب المدینۃ کراچی | بہار شریعت      | دارالفکر بیروت         | فتاویٰ رزازیہ         |



## नेक बनने का नुस्खा

पन्दरहवीं सदी की अजीम ईल्मी व इलानी शख्सियत  
शैखे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते ईस्लामी

दुर्गे अहरो के लिये

उजरेते अल्लामा मौलाना अबू बिलाद

मुहम्मद ईत्यास अतार कादिरि र-उवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ

ने ईस पुर कितन दौर में नेकियां करने और गुनाहों से बचने के तरीकों

पर मुश्तमिल शरीअत व तरीकत का जामेअ मजमूआ

## 27 म-दनी ईन्आमात

बे सूरते सुवालात अता इरमाअे हैं. ईन के मुताबिक आसानी  
से अमल करने का तरीकअे कार आबिर में दिया गया है. मजीद  
मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना की किसी भी शाख  
से किताब **“जन्नत के तलब गारों के लिये म-दनी गुलदस्ता”**  
तलब इरमा सकते हैं.



الحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين أما بعد فأقول بالله من الشئخ الرحيم بسم الله الرحمن الرحيم

## سुन्नत की बहारें

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
 ईस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतों सीपी और सिपाई जाती हैं, हर जुमा'रात ईशा की नमाज के बाद आप के शहर में होने वाले दा'वते ईस्लामी के हफ्तावार सुन्नतों (मरे) इजतिमाअ में रिज्अे ईलाही के विये अच्छी अच्छी निव्यतों के साथ सारी रात गुज़रने की म-दनी इल्तिज़ है. आशिकाने रसूल के म-दनी काफ़िलों में ब निव्यते सवाब सुन्नतों की तरबिब्यत के विये सफ़र और रोज़ना किंके मदीना के जरीअे म-दनी ईन्आमात का रिसावा पुर कर के हर म-दनी माह के इब्निदाई इस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के जिम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'भूल बना लीजिये, **إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ** ईस की अ-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नकरत करने और ईमान की छिक्राजत के विये कुठने का जेहून बनेगा.

हर ईस्लामी भाई अपना येह जेहून बनाये के "मुजे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की ईस्वाह की कोशिश करनी है. **إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ**" अपनी ईस्वाह की कोशिश के विये "म-दनी ईन्आमात" पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की ईस्वाह की कोशिश के विये "म-दनी काफ़िलों" में सफ़र करना है. **إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ**

### मड-त-अतुल मदीना की शां

- सूरत : वलियाभाई मस्जिद, प्वाज़ दाना दरगाह के पास. 9898615071
- जमनगर : पांच छाटडी, 9327977293
- भोडासा : सुका बज़र, 9725824820
- गांधीधाम : सपना नगर, मदीना मस्जिद के पास, 8141474279
- धौलका : ताजदारे मदीना मस्जिद के सामने, टावर बाज़र, 9374915797

**मड-त-अतुल मदीना**  
 दा'वते ईस्लामी مكتبة الدار

ईगाने मदीना, श्री डोलिया जगीचे के सामने, मिरजापुर, अहमदाबाद, गुजरात, इन्डिया  
 Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net